International Journal of Science and Social Science Research [IJSSSR] ISSN: 2583-7877

विकास खण्ड बरसठी (जनपद जौनपुर) में कृषक एवं कृषियेत्तर जनसंख्या

डॉ0 पारूली सिंह

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (भूगोल), राष्ट्रीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जमुहाई, जौनपुर, इंडिया

Author Email: paruli.jnp001@gmail.com

संक्षेप सार–विकास खण्ड बरसठी, जनपद जौनपुर में कृषक एवं कृषियेत्तर जनसंख्या का संतुलन ग्रामीण अर्थव्यवस्था की विविधता को दर्शाता है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, जिसमें मुख्यतः धान, गेहूँ और गन्ने की खेती की जाती है। कुल जनसंख्या का लगभग 65–70% भाग कृषक वर्ग में आता है, जबकि शेष 30–35% जनसंख्या कृषियेत्तर कार्यों जैसे व्यापार, सेवा, निर्माण कार्य एवं प्रवासी रोजगार में संलग्न है। कृषियेत्तर गतिविधियों में युवाओं की भागीदारी तेजी से बढ़ रही है, जिससे क्षेत्र में रोजगार के वैकल्पिक साधनों का विकास हो रहा है। यह परिवर्तन ग्रामीण विकास की दिशा में एक सकारात्मक संकेत है।

शब्द कुन्जीः– कृषि, जनसंख्या, परिवर्तन, सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियाँ।

I. प्रस्तावना

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जनसंख्या को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। कृषक जनसंख्या और कृषियेत्तर जनसंख्या। कृषक जनसंख्या वे लोग होते हैं जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कृषि एवं उससे जुड़े कार्यों में संलग्न होते हैं, जैसे कि किसान, खेतिहर मजदूर, पशुपालक आदि। वहीं, कृषियेत्तर जनसंख्या उन लोगों को कहा जाता है जो कृषि के अलावा अन्य क्षेत्रों, जैसे उद्योग, व्यापार, सेवा, शिक्षा एवं अन्य पेशों में कार्यरत होते हैं।

भारत की कुल जनसंख्या का एक बड़ा भाग आज भी कृषि पर निर्भर है, लेकिन औद्योगीकरण, शहरीकरण और तकनीकी प्रगति के कारण कृषियेत्तर कार्य क्षेत्रों में भी वृद्धि हो रही है। इससे ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन, कृषि में मशीनीकरण, और आर्थिक गतिविधियों के विविधीकरण जैसी प्रवृत्तियाँ देखने को मिल रही हैं। इस प्रस्तावना में हम कृषक एवं कृषियेत्तर जनसंख्या की परिभाषा, उनके बीच के अंतर, उनके आपसी संबंध, और भारत की आर्थिक एवं सामाजिक संरचना पर उनके प्रभाव का विश्लेषण करेंगे।

अध्ययन क्षेत्र –अध्ययन क्षेत्र बरसठी जनपद जौनपुर मड़ियाहूँ तहसील में स्थिति है। इसका अक्षांशीय विस्तार 25°25′ उत्तरी अक्षांश से 25°38′ उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तर से देशान्तरीय विस्तार 82°20′ पूर्वी देशान्तर से 82°35′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। विकास खण्ड बरसठी का क्षेत्रफल 217 वर्ग किलोमीटर है। अध्ययन क्षेत्र में 12 न्याय पंचायतें हैं। कृषक एवं कृषियेत्तर जनसंख्या के अध्ययन का उद्देश्य – विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पहलुओं को समझना है।

आर्थिक संरचना का विश्लेषणः–यह अध्ययन यह जानने में मदद करता है कि कितनी जनसंख्या कृषि कार्यों में लगी हुई है। रोजगार पैटर्न का अध्ययन – यह पता लगाना कि कृषि क्षेत्र से बाहर कितने लोग अन्य व्यवसायों में प्रवृत्त हो रहे हैं। आय स्तर की तुलना कृषक एवं कृषियेत्तर समुदायों की आय में कितना अंतर है, इस का मूल्यांकन करना। शहरीकरण एवं प्रवासन का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर हो रहे पलायन का कारण और प्रभाव समझना। **मेहरोत्रा के अनुसार**–''Jobless growth की अवधारणा पर प्रकाश डाला है, जिसमें आर्थिक विकास के

बावजूद पर्याप्त रोजगार सृजन नहीं हो पा रहा है। उन्होंने बताया कि दो–तिहाई ग्रामीण महिलायें अब कृषि में कार्यरत हैं, जबकि पुरूषों का अनुपात एक तिहाई है।''[1]

सामाजिक एवं जीवन शैली परिवर्तन :– कृषि और गैर–कृषि क्षेत्रों में रह रहे लोगों के जीवन शैली, शिक्षा स्तर, स्वास्थ्य सुविधाओं आदि का तुलनात्मक अध्ययन। **नीतिगत सुझाव–** सरकार और प्रशासन को बेहतर नीतियाँ बनाने में मदद करना ताकि कृषि और गैर–कृषि दोनों क्षेत्रों का संतुलित विकास हो सके। **जयती घोष के अनुसार**–''ग्रामीण भारत में सामाजिक और आर्थिक तनाव पर ध्यान केन्द्रित किया है, विशेषकर महिलाओं पर बढ़ते बोझ और परिवारों में बढ़ती असमानताओं पर। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के बढ़ते कृषि कार्यभार को ''एक खोई हुई पीढ़ी'' के रूप में वर्णित किया है।[2]

अध्ययन शोध–विधि– अध्ययन क्षेत्र विकास खण्ड बरसठी ब्लाक (जनपद–जौनपुर) के विश्लेषण कार्य हेतु एवं द्वीतियक आंकडों का उपयोग किया गया है। ये आंकड़े जिला विकास भवन, लखनऊ जनगणना कार्यालय से संग्रह कर इनका परिकलन किया गया है। इसे शोध पत्र में सारिणियों, सांख्यिकीय विधियों, तथा आख्यों एवं मानचित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

कृषक– अध्ययन क्षेत्र में कार्यरत जनसंख्या के अन्तर्गत कृषक आते हैं। अध्ययन क्षेत्र में सबसे अधिक कृषक न्याय पंचायत भन्नौर में 2001 की जनगणना के अनुसार 62.32 प्रतिशत है। 1991 की जनगणना के अनुसार सबसे अधिक कृषक पल्टूपुर न्याय पंचायत में 93.84 प्रतिशत थी। अतः अध्ययन क्षेत्र में 2001 की जनगणनानुसार कृषक मजदूरों की संख्या घटी है। 1991 की तुलना में 2001 में घटी है। केवल न्याय पंचायत भन्नौर में बढ़ी है। भन्नौर में 1991 की जनगणनानुसार 56.20 प्रतिशत थी जो 2001 की जनगणनानुसार 62.32 प्रतिशत है। अन्य न्याय पंचायतों में गोहका न्याय पंचायत में 1991 में 73.12 प्रतिशत थी, 2001 में 43.52 प्रतिशत है, हरद्वारी न्याय पंचायत में 1991 में 74.57 प्रतिशत थी, 2001 में 43.80 प्रतिशत है। न्याय पंचायत बरसठी में 1991 में 66.50 प्रतिशत थी, 2001 में 38.24 प्रतिशत है। दतांव न्याय पंचायत में 1991 में 66.00 प्रतिशत थी, 2001 में 37.85 प्रतिशत है। न्याय पंचायत पपरावज में 1991 में 59.03 प्रतिशत थी, 2001 में 34.17 प्रतिशत है। न्याय पंचायत गोठांव में 1991 में 62.69 प्रतिशत थी, 2001 में 51. 72 प्रतिशत है। न्याय पंचायत परियत में 1991 में 44.35 प्रतिशत थी, 2001 में 25.13 प्रतिशत है। न्याय पंचायत काटी में 1991 में 66.74 प्रतिशत थी, 2001 में 27.07 प्रतिशत है। न्याय पंचायत भदरांव में 1991 में 60.98 प्रतिशत थी, 2001 में 39.16 प्रतिशत है। न्याय पंचायत वाजिदपुर में 1991 में 56.12 प्रतिशत थी, 2001 में 49.20 प्रतिशत है। 2011 की जनगणना के अनुसार 66548 में (33.47 प्रतिशत) कुल कार्यरत जनसंख्या दर्ज की गई जिसमें कुल कृषको की जनसंख्या 34926 (17.56 प्रतिशत) है।

कृषि सांख्यिकीय रिपोर्ट्स–भारत सरकार द्वारा कृषि मंत्रालय द्वारा प्रकाशित "Agricultural Statistics at a Glance" रिपोर्ट (2020, 2022) में कृषक जनसंख्या, कृषि क्षेत्र में कार्यरत लोगों की संख्या, और कृषि उत्पादन से सम्बन्धित आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं। ये रिपोर्ट्स नीति निर्धारण और योजना निर्माण में सहायक हैं।[3]

कृषयेत्तर कार्यो में लगी जनसंख्या– कृषि कार्यों में लगी जनसंख्या अध्ययन क्षेत्र में 1991 की जनगणनानुसार कार्यरत जनसंख्या लगभग 38,504 व्यक्ति हैं जिसमें कृषि कार्यों में लगी जनसंख्या 6590 व्यक्ति है। 2001 की जनगणनानुसार 1,10,178 व्यक्ति है जिसमें कृषि कार्यों में लगी जनसंख्या 3,179 व्यक्ति है। 1991 की जनगणनानुसार सबसे अधिक कृ षयेत्तर कार्यों में लगी जनसंख्या वाजिदपुर न्याय पंचायत में 21.78 प्रतिशत है। 2001 की जनगणनानुसार न्याय पंचायत दतांव में 10.51 प्रतिशत है। अतः कृषयेत्तर जनसंख्या निरन्तर घटी है। 1991–2001 की जनगणनानुसार मुख्य

न्याय पंचायतों में न्याय पंचायत गोहका में 19.35 प्रतिशत से 5.77 प्रतिशत हो गये, न्याय पंचायत हरद्वारी में 14.66 प्रतिशत से 7.13 प्रतिशत हो गये, न्याय पंचायत पल्टूपुर में 14.90 प्रतिशत से 3.39 प्रतिशत हो गये, न्याय पंचायत भन्नौर में 12.44 प्रतिशत से 4.03 प्रतिशत हो गये, न्याय पंचायत बरसठी में 13.28 प्रतिशत से 1.45 प्रतिशत हो गये, न्याय पंचायत दतांव में 19.31 प्रतिशत से 10.51 प्रतिशत हो गये। पपरावन न्याय पंचायत में 15.65 प्रतिशत से 3.72 प्रतिशत हो गये। गोठांव न्याय पंचायत में 9.94 प्रतिशत से 8.58 प्रतिशत हो गये। परियत न्याय पंचायत में 20.06 प्रतिशत से 2.43 प्रतिशत हो गये, न्याय पंचायत काटी में 20.21 प्रतिशत से 5.97 प्रतिशत हो गये। भदरांव न्याय पंचायत में 16.02 प्रतिशत से 6.09 प्रतिशत हो गये, वाजिदपुर न्याय पंचायत में 21.78 प्रतिशत से 8.39 प्रतिशत हो गये। सबसे अधिक कृषियेत्तर जनसंख्या 1991 की जनगणनानुसार वाजिदपुर न्याय पंचायत में 21.78 प्रतिशत है। 2001 की जनगणनानुसार न्याय पंचायत दतांव में 10.51 प्रतिशत है। 2011 की जनगणना के अनुसार कुल कृषि श्रमिक 30519 (45.86 प्रतिशत) है जिसमें पुरूषो की संख्या 17718 (47.35 प्रतिशत) है जिसके पुरूषो की संख्या 17718 (47.53 प्रतिशत) है महिला 12807 (43.78 प्रतिशत) है।

बरसठी ब्लॉक में कार्यशील , कृषक, श्रमिक एवं सीमन्त श्रमिक जनसंख्या

वर्ष	कुल कार्यशील जनसंख्या	प्रतिशत में	कृषक जनसंख्या	प्रतिशत में	कृषि श्रमिक जनसंख्या	प्रतिशत में	सीमन्त श्रमिक जनसंख्या	प्रतिशत में
1991	38,504	62.69	2424	62.96	6590	17.11	4158	10.49
2001	51,953	42.64	22103	42.54	3179	6.11	21350	41.09
2011	66,548	33.47	34926	17.56	30519	45.86	31622	18.59

स्रोत सेन्सस फ्लापी 2011

अन्य व्यवसाय – भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ 97.7 प्रतिशत भाग में कृषि उपयोग भूमि है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि के अलावा अन्य व्यवसाय कपड़े सिलना, खिलौने बनाना, बागीचों से लकड़ी काटना आदि। अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र है यहां कृषि के साथ–साथ पशुपालन द्वारा दुग्ध उत्पादन करके उनका व्यवसाय करना है। बाग बगीचे में लगाकर फल बाजारों में बेचते हैं और कुम्हार मिट्टी के बर्तन व खिलौने तैयार करते हैं और उन्हीं का व्यवसाय करते हैं। लकड़ी काटकर उन्हें बाजार के भाव बेचते हैं बोई गयी अच्छी फसलें जैसे–उड़द, अरहर, तिल, आदि को व्यवस्थित कर उनका भी व्यापार करते हैं। अनुसूचित जाति के लोग पंखी, दौरी, सूप, बांस के बेंत द्वारा तैयार करते हैं उन्हें बाजार में बेचकर अपना भरण–पोषण करते हैं। पिछड़ी जातियां अपने परम्परागत व्यवसाय का पालन करते हैं जैसे यादव (अहिर) कृषि के साथ पशुपालन को परम्परागत व्यवसाय के रूप में अपनाये हुए हैं। धोबी (वस्त्र धोना) लोहार (लौह कार्य) बढ़ई (लकड़ी से फर्नीचर बनाना) तेली (तेल पेरना) आदि व्यवसाय में संलग्न है। "Revisiting Rural Non-farm Sector Employment In India-Sage Journals" इस जर्नल में ''ग्रामीण गैर–कृषि क्षेत्र में रोजगार के रूझानों का विश्लेषण करके यह बताया जाता है कि कृषि क्षेत्र में कार्यरत श्रमिको का प्रतिशत 78.4% से 59.8% हो गया है, जो ग्रामीण अर्थ व्यवस्था में संरचना परिवर्तन को दर्शाता है।''[4]

कृषि पर आधारित श्रमिक – अध्ययन क्षेत्र में किसी प्रकार का खनिज नहीं प्राप्त होता है। अतः लोगों को विविध प्रकार के उद्योगों और विनिर्माण कार्यों के लिए अच्छी सामग्री तथा पर्याप्त संसाधन भी अनुपलब्ध है। अधिकतर जनसंख्या कृषि आधारित लघु पारिवारिक उद्योगों में लगे हुए हैं जो प्राथमिक उत्पादनों के अन्तर्गत आते हैं जैसे– पशुपालन द्वारा दुग्ध विक्रय, तबेला, मिट्टी के बर्तन बनाने, लकड़ी के खिलौने बनाने, मिट्टी के खिलौने बनाने, ईंट–भट्ठा, तेल मील, चावल मील अत्यादि। 1991 की जनगणनानुसार अध्ययन क्षेत्र में कुटीर उद्योग कार्यों में लगी जनसंख्या 1534 व्यक्ति थी जो 2003 की जनगणनानुसार बढ़कर 4300 व्यक्ति हो गयी।

प्रमुख न्याय पंचायतों में कुटीर उद्योगों में कार्यरत जनसंख्या 1991 की जनगणनानुसार कुल सबसे अधिक भन्नौर न्याय पंचायत में 11.62 प्रतिशत है अन्य न्याय पंचायतों में 5 प्रतिशत से अधिक है।

गोहका, पल्ट्पुर, बरसठी, गोठांव, परियत, काटी, भदरांव, वाजिदपुर न्याय पंचायतें मध्यम स्तरीय हैं। हरद्वारी, पपरावन, दतांव न्याय पंचायतें न्यूनतम प्रतिशतवाली हैं। 2001 की जनगणनानुसार प्रमुख न्याय पंचायतों में कुटीर उद्योग जनसंख्या सबसे अधिक वाजिदपुर में 16.91 प्रतिशत है। अन्य न्याय पंचायतों में 6 प्रतिशत से अधिक नहीं है। हरद्वारी, भन्नौर, बरसठी, पपरावन, गोठांव, परियत, काटी, आदि न्याय पंचायतों में मध्यम स्तरीय जनसंख्या है। गोहका न्याय पंचायत, पल्टूपुर, दतांव, भदरांव न्याय पंचायतें हैं जहां 2 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या है। ये न्यून स्तरीय न्याय पंचायतें हैं। 2011 के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में कुल 6802 व्यक्ति है जो कुटीर उद्योग के कार्यों में लगे हुए हैं।

सीमान्त श्रमिक – मुख्य श्रमिक वे थे जिन्होंने जनगणना से पहले के वर्ष के भाग में काम किया अतः दूसरी तरफ जिन्होंने जनगणना से पहले वर्ष में किसी समय काम तो किया पर अधिकांश समय तक नहीं किया सीमान्त श्रमिक है। 1981 की जनगणना के समय मुख्य श्रमिकों व सीमान्त श्रमिकों में भेद किया।

अध्ययन क्षेत्र में 1991 की जनगणना के अनुसार कुल कार्य करने वाली जनसंख्या में सीमान्त श्रमिकों की कुलसंख्या 4158 व्यक्ति थी जो 2001 की जनगणना के अनुसार बढ़कर 21,350 व्यक्ति हो गयी। अतः अध्ययन क्षेत्र में 1991 की जनगणना के अनुसार गोहका न्याय पंचायत में सबसे अधिक सीमान्त श्रमिक 26.34 प्रतिशत है और अन्य न्याय पंचायतों में हरद्वारी में 10.34 प्रतिशत, पल्टूपुर न्याय पंचायत में 8.47 प्रतिशत, भन्नौर न्याय पंचायत में 4.13 प्रतिशत, बरसठी न्याय पंचायत में 11 प्रतिशत, दतांव न्याय पंचायत में 8.98 प्रतिशत, पपरावन न्याय पंचायत में 11.86 प्रतिशत, न्याय पंचायत गोठांव में 9.94 प्रतिशत, न्याय पंचायत परियत में 11.86 प्रतिशत, न्याय पंचायत 15.37 प्रतिशत, न्याय पंचायत भदरांव में 11.23 प्रतिशत, न्याय पंचायत वाजिदपुर में 2.10 प्रतिशत सीमान्त श्रमिक हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार सीमान्त श्रमिकों की जनसंख्या 21350 व्यक्ति है।

अध्ययन क्षेत्र में सीमान्त श्रमिकों की संख्या सबसे अधिक न्याय पंचायत भन्नौर में 50.54 प्रतिशत है। अन्य न्याय पंचायतों में गोहका न्याय पंचायत में 39.01 प्रतिशत, हरद्वारी न्याय पंचायत में 32.51 प्रतिशत, पल्टूपुर न्याय पंचायत में 45.39 प्रतिशत, न्याय पंचायत बरसठी में 40.57 प्रतिशत, न्याय पंचायत दतांव में 31.25 प्रतिशत, न्याय पंचायत पपरावन में 41.17 प्रतिशत, न्याय पंचायत गोठांव में 39.72 प्रतिशत, न्याय पंचायत परियत में 43.94 प्रतिशत, न्याय पंचायत काटी में 33 प्रतिशत, न्याय पंचायत भदरांव में 37.17 प्रतिशत, न्याय पंचायत वाजिदपुर में 25.95 प्रतिशत सीमान्त श्रमिक हैं। जनगणना 2011 के अनुसार बरसठी ब्लॉक में सीमान्त श्रमिको की कुल जनसंख्या 31622 (18.59 प्रतिशत) है जिसमें पुरूषो की जनसंख्या 12188 (12.93 प्रतिशत) एवं महिला जनसंख्या 19434 (18.59 प्रतिशत) आंकी गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. **मेहरोत्रा, सन्तोष** –''Jobless growth की अवधारणा, 2021–22
2. **घोष, जयती (यूनिवर्सिटी ऑफ मैसाचुसेट्स,एमहर्स्ट)**–When Government fail Covid-19 and the Economy 2021.
3. Agricultural Statistics at a Glance, Agricultural Report 2022, 2024.
4. Revisiting Rural Non-Farm Sector Employment in India- Sage Journal. Report 2023-24.